चिरंजीवी परियोजना ने बिखेरी कुपोषित बच्चों के चेहरे पर मुस्कान

जेएसपीएल फाउंडेशन जेपीएल तमनार की पहल, विगत 6 वर्षों में तमनार ब्लाक के 48 गांवों के 3904 बच्चे कुपोषण से बाहर आए









क्रांतिकारी/न्यूज

रायगढ़। जेएसपीएल फाउन्डेशन जेपीएल तमनार अपने सीएसआर परियोजनाओं के माध्यम से तमनार क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, जीविकोपार्जन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास व आधारभूत संरचना निर्माण की विभिन्न परियोजनाओं का संचालन कर रही है ताकि क्षेत्र का सतत् सामाजिक व आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके। स्वास्थ्य के क्षेत्र में जेएसपीएल फाउन्डेशन वात्सल्य परियोजना के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर संस्थागत प्रसव, गर्भवती व धात्री माताओं की सम्पूर्ण देखभाल, 0-18 माह तक के बच्चों का शत प्रतिशत टीकाकरण हेतु सक्रिय भागीदारी निभा रही है ताकि शिशु मृत्युदर व मातृ मृत्युदर को न्यूनतम स्तर पर लाया जा सके। बच्चों में कुपोषण सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में एक बड़ी चुनौती है। नीति आयोग के अनुसार छत्तीसगढ़ में 0-5 वर्ष के 37.7 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। उपरोक्त स्थितियों को देखते हुए जेएसपीएल फाउन्डेशन द्वारा वर्ष 2014-15 में बच्चों में कुपोषण दूर करने हेतु चिरंजीवी परियोजना की शुरूवात की जिसका शुभारंभ तत्कालीन विधायक सुनिती राठिया द्वारा ग्राम छर्राटांगर में किया गया था। परियोजना समन्वित बाल विकास योजना, (आईसीडीएस) के संयुक्त तत्वाधान में क्षेत्र के 38 ग्राम में लागू की गई। परियोजना अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष 06 माह से 5 वर्ष तक के समस्त बच्चों का बीएमआई किया जाता है तथा चिन्हित कुपोषित बच्चों की सम्पूर्ण देखभाल पोषाहार चिकित्सीय सहायता के साथ साथ अभिभावकों को जानकारी और परामर्श दिया जाता तथा बच्चों की निरन्तर निगरानी स्वास्थ्य संगिनियों द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर की जाती है। परियोजना अन्तर्गत वर्ष 2014-15 में चिन्हित कुपोषित बच्चों की संख्या 750 2015-16 502, 2016-17 में 487, 2017-18 में 677, 2018-19 में 788, 2019-20 में 700 और 2020-21 में 405 थी। परियोजना अन्तर्गत अब तक कुल 4309 कुपोषित बच्चे चिन्हित किये गये जिसमें से वर्ष 2014-15 से अब तक 3904 बच्चे कुपोषण से बाहर आए। वर्तमान में 405 कुपोषित बच्चों की देखभाल जारी है। जेएसपीएल फाउन्डेशन ने तमनार ब्लाक के 38 गांव को कुपोषण मुक्त करने का लक्ष्य रखा है।

तुलसी को मिली नई जिंदगी

परियोजना की सफलता का उदाहरण है 05 वर्षिय बच्ची तुलसी जो कि ग्राम कसडोल की रहने वाली है। बच्ची के माता-पिता रामकुमार मांझी व चन्द्रीका मांझी मजदूरी का कार्य कर अपने परिवार को चला रहे थे। दिसम्बर 2015 में उन्होने तुलसी को जन्म दिया। जन्म के समय तुलसी का वजन 2.900 ग्राम था परन्तु जन्म के 01 वर्ष के अन्दर बच्ची को टाइफाइड हो जाने के कारण उसका वजन सामान्य से बहुत ही कम हो गया तथा बच्ची गंभीर कुपोषण के स्तर पर आ गयी व उसका विकास रूक गया। 02 वर्ष पूरे होने के बाद भी बच्ची चलने में असमर्थ थी। उसकी मां चन्द्रीका मांझी के अनुसार तुलसी को बचा पाना मुश्किल लग रहा था व आर्थिक अभाव के कारण बच्ची को अच्छे अस्पताल में ईलाज भी नही कर सकते थे। वर्ष 2016 में बच्ची को चिरंजीवी परियोजना से जोड़ा गया, लगातार निगरानी, देखभाल, चिकित्सीय परामर्श तथा पोषाहार की व्यवस्था कर बच्ची को 02 वर्ष पश्चात सामान्य स्तर पर लाया गया तुलसी अब प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर रही है और पूर्णतया स्वस्थ्य जीवन व्यतीत कर रही है। मां चन्द्रीका व पिता रामकुमार के चेहरे पर खुशियां देखी जा सकती है। ग्राम कचकोबा जो कि तमनार ब्लाक का आदिवासी बाहुल्य पिछड़ा गांव है गांव की निवासी श्रीमती पूर्णिमा राठिया पत्नी चित्रसेन राठिया बताती हैं कि उनका बेटा अंकुश राठिया अप्रैल 2019 को 01 वर्ष 08 माह का था उसका वजन मात्र 6 किलो 500 ग्राम था जबकि इस उम्र के सामान्य बच्चे का न्यूनतम वजन 8 किलो 600 ग्राम होना चाहिए अर्थात् वह गंभीर कुपोषण की श्रेणी में था परियोजना अंतर्गत जोड़ने के बाद निरंतर देखभाल व चिकित्सीय परामर्श के बाद अभी की स्थिति में उसका वजन 11 किलो 800 ग्राम है और वह सामान्य जिंदगी जी रहा है। इसी तरह की कई सफलताऐं चिरंजीवी परियोजना ने हासिल की है तथा हजारों कुपोषित बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने में सराहनीय भूमिका निभाई है और यह प्रयास निरंतर जारी है।